Exam Date - 14/02/23

Rec 22/2/23

पुस्तिका में पृष्ठों की संख्या : 16
Number of Pages in Booklet : 16

पुस्तिका में प्रश्नों की संख्या : 150
No. of Questions in Booklet : 150

Paper Code : 06

Sub: Sanskrit

समय : 2:30 घण्टे
Time : 2:30 Hours

STS-32

प्रश्न-पुस्तिका संख्या व बारकोड
Question Booklet No. & Barcode

3190117

इस प्रश्न-पुस्तिका को तब तक न खोलें जब तक कहा न जाए
Do not open this Question Booklet until you are asked to do so.

Paper - II

अधिकतम अंक : 300
Maximum Marks : 300

प्रश्न-पुस्तिका के पेपर की सील/पॉलिथीन बैग को खोलने पर प्रश्न-पत्र हल करने से पूर्व परीक्षार्थी यह सुनिश्चित कर लें कि :

- **प्रश्न-पुस्तिका संख्या तथा ओ.एम.आर. उत्तर-पत्रक पर अंकित बारकोड संख्या समान है।**
- **प्रश्न-पुस्तिका एवं ओ.एम.आर. उत्तर-पत्रक के सभी पृष्ठ व सभी प्रश्न सही मुद्रित हैं। समस्त प्रश्न, जैसा कि ऊपर वर्णित है, उपलब्ध हैं तथा कोई भी पृष्ठ कम नहीं है/मुद्रण त्रुटि नहीं है।**

किसी भी प्रकार की विसंगति या दोषपूर्ण होने पर परीक्षार्थी वीक्षक से दूसरा प्रश्न-पत्र प्राप्त कर लें। यह सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी अभ्यर्थी की होगी। परीक्षा प्रारम्भ होने के 5 मिनट पश्चात् ऐसे किसी दावे/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

On opening the paper seal/polythene bag of the Question Booklet before attempting the question paper the candidate should ensure that :

- **Question Booklet Number and Barcode Number of OMR Answer Sheet are same.**
- **All pages & Questions of Question Booklet and OMR answer sheet are properly printed. All questions as mentioned above are available and no page is missing/misprinted.**

If there is any discrepancy/defect, candidate must obtain another Question Booklet from Invigilator. Candidate himself shall be responsible for ensuring this. No claim/objection in this regard will be entertained after five minutes of start of examination.

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
2. **सभी** प्रश्नों के अंक समान हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का मात्र **एक** ही उत्तर दीजिए।
4. एक से अधिक उत्तर देने की दशा में प्रश्न के उत्तर को गलत माना जाएगा।
5. OMR उत्तर-पत्रक इस प्रश्न-पुस्तिका के अन्दर रखा है। जब आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने को कहा जाए, तो उत्तर-पत्रक निकाल कर ध्यान से केवल **नीले बॉल पॉइंट पेन** से विवरण भरें।
6. कृपया अपना रोल नम्बर ओ.एम.आर. उत्तर-पत्रक पर सावधानीपूर्वक सही भरें। गलत रोल नम्बर भरने पर परीक्षार्थी स्वयं उत्तरदायी होगा।
7. **प्रत्येक गलत उत्तर के लिए प्रश्न अंक का 1/3 भाग काटा जायेगा।** गलत उत्तर से तात्पर्य अशुद्ध उत्तर अथवा किसी भी प्रश्न के एक से अधिक उत्तर से है।
8. प्रत्येक प्रश्न के चार वैकल्पिक उत्तर दिये गये हैं, जिन्हें क्रमश: **1, 2, 3, 4** अंकित किया गया है। अभ्यर्थी को सही उत्तर निर्दिष्ट करते हुए उनमें से केवल एक गोले अथवा बबल को उत्तर-पत्रक पर **नीले बॉल पॉइंट पेन** से गहरा करना है।
9. मोबाइल फोन अथवा इलेक्ट्रोनिक यंत्र का परीक्षा हॉल में प्रयोग पूर्णतया वर्जित है। यदि किसी अभ्यर्थी के पास ऐसी कोई वर्जित सामग्री मिलती है तो उसके विरुद्ध आयोग द्वारा नियमानुसार कार्यवाही की जायेगी।

चेतावनी : अगर कोई अभ्यर्थी नकल करते पकड़ा जाता है या उसके पास से कोई अनधिकृत सामग्री पाई जाती है, तो उस अभ्यर्थी के विरुद्ध पुलिस में प्राथमिकी दर्ज कराते हुए **राजस्थान सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) अधिनियम, 2022 तथा अन्य प्रभावी कानून एवं आयोग के नियमों-प्रावधानों** के तहत कार्यवाही की जाएगी। साथ ही आयोग ऐसे अभ्यर्थी को भविष्य में होने वाली आयोग की समस्त परीक्षाओं से विवर्जित कर सकता है।

INSTRUCTIONS FOR CANDIDATES

1. Answer **all** questions.
2. **All** questions carry equal marks.
3. Only **one** answer is to be given for each question.
4. If more than one answers are marked, it would be treated as wrong answer.
5. The **OMR** Answer Sheet is inside this Question Booklet. When you are directed to open the Question Booklet, take out the Answer Sheet and fill in the particulars carefully with **Blue Ball Point Pen** only.
6. Please correctly fill your Roll Number in **O.M.R.** Answer Sheet. Candidate will themself be responsible for filling wrong Roll No.
7. **1/3 part of the mark(s) of each question will be deducted for each wrong answer.** A wrong answer means an incorrect answer or more than one answers for any question.
8. Each question has four alternative responses marked serially as **1, 2, 3, 4.** You have to darken only one circle or bubble indicating the correct answer on the Answer Sheet using **Blue Ball Point Pen.**
9. Mobile Phone or any other electronic gadget in the examination hall is strictly prohibited. A candidate found with any of such objectionable material with him/her will be strictly dealt as per rules.

Warning : If a candidate is found copying or if any unauthorized material is found in his/her possession, F.I.R. would be lodged against him/her in the Police Station and he/she would liable to be prosecuted under **Rajasthan Public Examination (Prevention of Unfair means) Act, 2022 & any other law applicable and Commission's Rules-Regulations.** Commission may also debar him/her permanently from all future examinations.

उत्तर-पत्रक में दो प्रतियाँ हैं – मूल प्रति और कार्बन प्रति, परीक्षा समाप्ति पर परीक्षा कक्ष छोड़ने से पूर्व परीक्षार्थी उत्तर-पत्रक की दोनों प्रतियाँ वीक्षक को सौंपेंगे, परीक्षार्थी स्वयं कार्बन प्रति अलग नहीं करें। वीक्षक उत्तर-पत्रक की मूल प्रति को अपने पास जमा कर, कार्बन प्रति को मूल प्रति से कट लाइन से मोड़ कर सावधानीपूर्वक अलग कर परीक्षार्थी को सौंपेंगे। परीक्षार्थी कार्बन प्रति को अपने साथ ले जायेंगे।

06-□

1. शॄ + क्त इत्यत्र रूपं भवति –

(1) शृतः (2) शिर्तः

(3) शीर्णः (4) शीर्नः

2. "समानकर्तृकयोः पूर्वकाले" इति सूत्रेण प्रत्ययो भवति –

(1) तुमुन् – प्रत्ययः

(2) क्तिन्–प्रत्ययः

(3) क्तवतु–प्रत्ययः

(4) कत्वाप्रत्ययः

3. 'दाक्षायणः' इत्यत्र फक् प्रत्ययः केन सूत्रेण भवति ?

(1) नडादिभ्यः फक् ।

(2) यञिञोश्च ।

(3) गोत्रे कुञ्जादिभ्यश्चफञ् ।

(4) अत इञ् ।

4. प्रत्ययविषये असङ्गतं कथनं वर्तते –

(1) वृङ्धातोः षाकन् प्रत्यये – वराकः ।

(2) भिक्ष् धातोः उ प्रत्यये – भिक्षुकः ।

(3) वि + भ्राज् धातोः क्विप् प्रत्यये – विभ्राट् ।

(4) याच् धातोः नङ् प्रत्यये – याच्या ।

5. 'राजन्यः, क्षत्रियः, कुलीनः, रैवतिकः' इत्यत्र क्रमशः प्रत्ययाः सन्ति –

(1) यत्, घ, ख, ठक् ।

(2) यत्, इय्, ईन, इक ।

(3) ण्य, घ, फ, ठञ् ।

(4) ण्य, घ, ख, ठक् ।

6. निम्नलिखितेषु विकल्पेषु प्रत्ययदृष्ट्या अनुचित–विकल्पं विचिनुत –

(1) इष्ठन् – दविष्ठः, स्थविष्ठः, भूयिष्ठः

(2) ईयसुन् – ज्यायान्, वृन्दीयान्, गरीयान् ।

(3) ख – विश्वजनीनम्, राजभोगीनः, स्वभोगीनः ।

(4) ष्यञ् – कार्श्यम्, द्राघिमा, शीतिमा ।

7. घसंज्ञकौ प्रत्ययौ स्तः –

(1) शतृ–शानचौ (2) तरप् –तमपौ

(3) क्त–क्तवतु (4) इष्ठन् – ईयसुनौ ।

8. स्त्री प्रत्ययानां विषये समुचितं विकल्पं चिनुत –

(1) पचन्ती – ङीष् प्रत्ययः ।

(2) कुमारी – टाप् प्रत्ययः ।

(3) त्रिलोकी – ङीप् प्रत्ययः ।

(4) गार्ग्यायणी – डाप् प्रत्ययः ।

9. "तलुनी" इत्यत्र कः प्रत्ययः ?

(1) ङीन् (2) ङीष्

(3) ङीप् (4) ति

10. "हरि" शब्दस्य "पति" शब्दस्य च सप्तम्याः एकवचने क्रमशः रूपेस्तः –

(1) हरौ, पतौ (2) हरौ, पत्यौ

(3) हर्यौ, पत्यौ (4) हरिषु, पतिषु

11. "राजन्" शब्दस्य क्रमशः चतुर्थी–पञ्चमी–सप्तमी–एकवचनस्य रूपाणि सन्ति –

(1) राज्ञे, राज्ञः, राज्ञि ।

(2) राज्ञे, राज्ञा, राजनि ।

(3) राजाय, राजस्य, राजे ।

(4) राज्ञः, राज्ञे, राज्ञि ।

12. शब्दरूपविषये असमुचितं मेलनं वर्तते –
(1) स्त्री शब्दस्य द्वितीया बहुवचने – स्त्रियः
(2) धेनु शब्दस्य सम्बोधन एकवचने – हे धेनुः !
(3) वधू शब्दस्य सप्तम्याः एकवचने – वध्वाम्
(4) नदी शब्दस्य चतुर्थ्येकवचने – नद्यै

13. रमा शब्दस्य षष्ठी बहुवचने, सर्व शब्दस्य स्त्रियां षष्ठी बहुवचने च रूपेस्तः ।
(1) रमाणाम्, सर्वाणाम्
(2) रमानाम्, सर्वासाम्
(3) रमाणाम्, सर्वेषाम्
(4) रमाणाम्, सर्वासाम्

14. सखि + ङि इति प्रत्यये शब्दरूपं स्यात् –
(1) सखायौ (2) सख्योः
(3) सख्या (4) सख्यौ

15. वारि शब्दस्य प्रथमा बहुवचने, मधु शब्दस्य सप्तम्येकवचने रूपेस्तः –
(1) वारिणी, मधुनी (2) वारीणि, मधूनि
(3) वारीणि, मधुनि (4) वारिणी, मधुनि

16. धनुष् शब्दस्य प्रथमा बहुवचने रूपं वर्तते –
(1) धनुषः (2) धनुषाः
(3) धनुंषि (4) धनूंषि

17. 'युष्माकम्' 'मह्यम्' 'त्वयि' – इत्यत्र क्रमशः विभक्तयः सन्ति ।
(1) षष्ठी, द्वितीया, सप्तमी ।
(2) षष्ठी, चतुर्थी, सप्तमी ।
(3) द्वितीया, तृतीया, सम्बोधनम् ।
(4) तृतीया, द्वितीया, चतुर्थी ।

18. "इदम्" शब्दस्य तृतीयैकवचने, किम् शब्दस्य द्वितीया द्विवचने च क्रमशः रूपेस्तः –
(1) अनेन, कौ (2) अनेन, किमौ
(3) इनेन, कौ (4) इदमेन, के

19. भू धातोः विधिलिङ्लकारे उत्तम पुरुषैकवचने रूपं वर्तते –
(1) भवेः (2) भवेयम्
(3) भवानि (4) भूयासम्

20. असङ्गतं विकल्पं चिनुत
(1) गम् धातोः लिटि प्रथमपुरुषैकवचने – जगाम ।
(2) दृश् धातोः लृटि उत्तमपुरुषैकवचने – पश्यामः ।
(3) दृश् धातोः लुङि मध्यमपुरुषैकवचने – अद्राक्षीः ।
(4) गम् धातोः लङि उत्तमपुरुषैकवचने – अगच्छम् ।

21. "नम्" धातोः लङ्लकारस्य मध्यमपुरुषस्यैकवचने रूपं वर्तते –
(1) अनमत (2) अनम
(3) अनमन् (4) अनमः

22. अस् धातोः प्रथमपुरुषैकवचनस्य रूप विषये असत्यकथनं वर्तते –
(1) लृट्लकारे – अस्ति
(2) लृट्लकारे – अस्यति
(3) लिट्लकारे – बभूव
(4) लङ्लकारे – आसीत्

23. "सेव्" धातोः लिट्लकारस्य प्रथमपुरुषैकवचने रूपं वर्तते –
(1) असेवत (2) सिसाव
(3) सिषेवे (4) सिसेवे

24. "लभ्" धातोः लृट्लकारे उत्तमपुरुषस्य द्विवचने रूपं वर्तते –
(1) लप्स्यावहि (2) लप्स्यामहे
(3) लप्स्यावहे (4) अलप्स्यावहे

25. 'अदत्त' रूपमिति भवति –
(1) आत्मने पदे लङ्लकारे, प्रथम–पुरुषैकवचने ।
(2) आत्मने पदे, लुङि, प्रथमपुरुषैकवचने ।
(3) परस्मै पदे, लङि, मध्यमपुरुषैकवचने ।
(4) आत्मने पदे, लङि उत्तमपुरुषैकवचने ।

26. "शक्" धातोः ङित्लकाराणां धातुरूपसंदर्भे समुचित कूट विकल्पं चिनुत –
(क) शशाक । (ख) अशक्नोत् ।
(ग) शक्नुयात् । (घ) शक्नुवन्ति ।
(1) (क), (ख), (ग), (घ)
(2) (क), (ख), (ग)
(3) (ख), (ग)
(4) (ख), (ग), (घ)

27. "गच्छतु भवान् ______ दर्शनाय" इत्यत्र उचिताव्ययपदेन रिक्तस्थानं पूरयत –
(1) चिरम् (2) नमस्
(3) अलम् (4) पुनर्

28. "न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा ____ बभूवह" । इत्यत्र रिक्तस्थानमुचिताव्ययपदेन प्रपूरयत –
(1) अद्य (2) अत्र
(3) तूष्णीम् (4) चिरम्

29. '______ च शोभते मूर्खो ______ किञ्चिन्न भाषते' इति वाक्ये, क्रमशः अव्ययपदे स्तः –
(1) यावत्, तथा (2) यथा, तथा
(3) तावत्, यावत् (4) यावत्, तावत्

30. यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत । अस्यां पङ्क्तौ अव्ययपदं किम् –
(1) धर्मस्य (2) यदा
(3) ग्लानिः (4) भारत

31. 'न ______ न ______ बाणः सन्निपात्योऽयमस्मिन्' इत्यत्र एकेन अव्ययपदेन रिक्तस्थानयोः पूरयतः
(1) चिरम् (2) अलम्
(3) किल (4) खलु

32. ______ पन्थाः ______ कन्थाः ______ पर्वतलङ्घनम् ______ विद्या ______ वित्तं ______ पञ्चैतानि ______
उपर्युक्तानि रिक्तस्थानि एकेनैव अव्ययपदेन पूरयत ।
(1) उच्चैः (2) किमर्थम्
(3) शनैः (4) अलम्

33. "मम न रोचते तव वाक्यम् ।"
इत्यस्य शुद्धवाक्यं विद्यते –
(1) मम न रोचते तुभ्यं वाक्यम् ।
(2) मह्यं न रोचते तव वाक्यम् ।
(3) मया न रोचते तव वाक्यम् ।
(4) मां न रोचते तव वाक्यम् ।

34. अधोलिखितेषु वाक्येषु शुद्धं वाक्यमस्ति –
(1) भक्ताः मने चेते वा ईश्वरं चिन्तयन्ति ।
(2) भक्ताः मनसि चेतसि वा ईश्वरं चिन्तयन्ति ।
(3) भक्ताः मनसि चेतसि वा ईश्वरस्य चिन्तयन्ति ।
(4) भक्ताः मने चेतसि वा ईश्वरं चिन्तयामि ।

35. 'नृपेण मृगेषु शराः अक्षिपत्' । इत्यस्य वाक्यस्य शुद्धं रूपम् अस्ति –
(1) नृपः मृगेषु शरान् अक्षिपत् ।
(2) नृपेण मृगेषु शरान् अक्षिपत् ।
(3) नृपः मृगाणाम् शरान् अक्षिपत् ।
(4) नृपाः मृगेषु शरान् अक्षिपत् ।

36. कारकदृष्ट्या अशुद्धं वाक्यं वर्तते –
(1) राजानगरम् उपवसति ।
(2) ब्रह्मचारी काष्ठपीठे अधिशेते ।
(3) अभितोऽध्वानं जम्बू पादपा विलसन्ति ।
(4) बुभुक्षितं न प्रतिभाति किञ्चित् ।

37. 'तुम अकेले क्या मन्त्रणा कर रहे हो' अस्य संस्कृतानुवादः वर्तते –
(1) किमेकाकी मन्त्रयसे ।
(2) कः एकाकी मन्त्रयते ।
(3) त्वम् एकाकी मन्त्रयसे ।
(4) एकाकी त्वं किमर्थं मन्त्रयसे ।

38. "वह मुझसे तीन पुस्तकें मांगता है ।" इत्यस्य संस्कृतानुवादः विद्यते –
(1) सः मां त्रीणि पुस्तकानि याचते ।
(2) सः मे त्रीणि पुस्तकानि याचते ।
(3) सः मया त्रिणी पुस्तकानि याचते ।
(4) सः मयि त्रिणि पुस्तकानि याचते ।

39. "विश्वामित्र राजा दशरथ के पास गया ।" इत्यस्य संस्कृतानुवादोऽस्ति –
(1) विश्वामित्रः राजा दशरथं निकषा अगच्छः ।
(2) विश्वामित्रः राज्ञः दशरथस्य समीपे जगाम ।
(3) विश्वामित्रः राज्ञः दशरथस्य निकषा अगच्छत् ।
(4) विश्वामित्रः राज्ञः दशरथं निकषा अगच्छत् ।

40. "यदि तू यहाँ ठहरता तो मच्छर पीड़ा देते ।" इत्यस्य शुद्धः संस्कृतानुवादोऽस्ति –
(1) यदि त्वम् अत्र तिष्ठसि तर्हि त्वं मशकाः पीडयिष्यन्ति ।
(2) यदि त्वमत्रास्थास्यत् तर्हि मशकाः त्वामपीडयिष्यन् ।
(3) यदि त्वमत्रास्थास्यः तर्हि मशकाः त्वामपीडयिष्यन् ।
(4) यदि त्वम् अत्र स्थास्यसि तर्हि मशकाः त्वाम् अपीडयिष्यत् ।

41. 'कुशिक्षा शोक के लिए होती है ।' इत्यस्य संस्कृतानुवादो वर्तते –
(1) कुशिक्षा शोकाय जायन्ते ।
(2) कुशिक्षायै शोकः जायते ।
(3) कुशिक्षया शोकः जायेते ।
(4) कुशिक्षा शोकाय जायते ।

42. "हे पुत्र ! यज्ञस्तम्भ के लिये लकड़ी ला" । इत्यस्य शुद्धानुवादः चेयः ।
(1) हे पुत्रः ! यूपाय दारुः आनयतु ।
(2) हे पुत्रः ! यूपाय दारु आनय ।
(3) हे पुत्रः ! यूपाय दारुम् आनय ।
(4) हे पुत्रः ! यूपायै दारु आनय ।

43. अर्थो हि कन्या परकीय एव

तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः ।

जातो ममायं विशदः प्रकामं

प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा ।

पद्येऽस्मिंन् छन्दो वर्तते –

(1) उपजाति (2) उपेन्द्रवज्रा

(3) इन्द्रवज्रा (4) वियोगिनी

44. कस्मिन् छन्दसि "ननमयययुतेयम्" इति लक्षणं भवति –

(1) इन्द्रवज्रा (2) उपेन्द्रवज्रा

(3) आर्या (4) मालिनी

45. प्रहर्षिणी छन्दसि यतिः भवति –

(1) त्रिभिः दशभिश्च वर्णैः ।

(2) दशभिः त्रिभिश्च वर्णैः ।

(3) चतुर्भिः नवभिश्च वर्णैः ।

(4) चतुर्भिः त्रिभिः सप्तभिश्च वर्णैः ।

46. शिखरिणी–छन्दसि प्रतिचरणं क्रमशः यतिर्भवति –

(1) एकादशैः षड्भिश्च वर्णैः ।

(2) सप्तभिः चतुर्भिश्च वर्णैः ।

(3) षड्भिः एकादशैश्च वर्णैः ।

(4) अष्टभिः सप्तभिश्च वर्णैः

47. रात्रिर्गता मतिमतां वर ! मुञ्च शय्यां, धात्रा द्विधैव ननु धूर्जगतो विभक्ता । इत्यत्र छन्दः वर्तते –

(1) मालिनी (2) वसन्ततिलका

(3) पुष्पिताग्रा (4) हरिणी

48. समुचितं मेलनं कुरुत –

(क)	उपजातिः	(i)	सप्तदश वर्णाः
(ख)	वियोगिनी	(ii)	एकोनविंशतिः वर्णाः
(ग)	शार्दूलविक्रीडितम्	(iii)	अर्धसमवृत्तम्
(घ)	हरिणी	(iv)	एकादश वर्णाः

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(1)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(2)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(3)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(4)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)

49. हरिणी छन्दसि यति व्यवस्था भवति –

(1) चतुर्भिः, षड्भिः सप्तभिश्च वर्णैः ।

(2) षड्भिः, चतुर्भिः, सप्तभिश्च वर्णैः ।

(3) सप्तभिः, सप्तभिः, सप्तभिश्च वर्णैः ।

(4) षड्भिः एकादशभिश्च वर्णैः ।

50. "पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः" पद्येऽस्मिन् छन्दः अस्ति –

(1) इन्द्रवज्रा (2) उपेन्द्रवज्रा

(3) शार्दूलविक्रीडितम् (4) वियोगिनी

51. उपमानोपमेययोः चेत् विशेषः (स्यात्–तर्हि) कोऽलंकारः ?

(1) दीपकालंकारः (2) रूपकालंकारः

(3) उपमालंकारः (4) व्यतिरेकालंकारः

52. यत्र निह्नुतिं विना हेत्वादिः उन्नीयते तत्र कोऽलंकारः ?

(1) उत्प्रेक्षा (2) रूपकम्

(3) उपमा (4) स्वभावोक्तिः

53. "बिम्बप्रतिबिम्बत्वं" चेत् कोऽलङ्कारः भवितुं शक्नोति ?

(1) भ्रान्तिमान् (2) निदर्शना

(3) दृष्टान्तः (4) अर्थान्तरन्यासः

54. यत्र उपमानोपमेययोः सादृश्यलक्ष्मीः उल्लसति तत्र कः अलङ्कारो भवति ?

(1) उत्प्रेक्षा (2) रूपकम्

(3) व्यतिरेकः (4) उपमा

55. "अयं प्रमत्तमधुपस्त्वन्मुखं वेद पङ्कजम्" इत्यस्मिन् प्रस्तुतोदाहरणे कोऽलंकारः स्यात् ?

(1) सन्देहः (2) व्यतिरेकः

(3) भ्रान्तिमान् (4) दृष्टान्तः

56. 'पङ्कजं वा सुधांशुर्वेत्यस्माकं तु न निर्णयः' कस्यालङ्कारस्योदाहरणमेतत् ?

(1) भ्रान्तिमान् (2) श्लेषः

(3) अर्थान्तरन्यासः (4) सन्देहः

57. "आवृत्तवर्णस्तवकं स्तवकन्दाङ्कुरं कवेः" श्लोकार्थेऽस्मिन् कः अलङ्कारः ?

(1) श्लेषः (2) यमकम्

(3) अनुप्रासः (4) वक्रोक्तिः

58. प्रथमाविभक्ति सन्दर्भे समुचितं मेलनं नास्ति –

(1) प्रातिपदिकार्थमात्रे प्रथमा – कृष्णः, श्री ज्ञानम् ।

(2) लिङ्गमात्राधाधिक्ये प्रथमा – तटः, तटी, तटम् ।

(3) परिमाणमात्रे प्रथमा, उच्चैः, नीचेः ।

(4) वचनमात्रे प्रथमा – एकः, द्वौ, बहवः ।

59. कर्तुः क्रियया आप्तुम् इष्टतमं कारकं किं सञ्ज्ञं भवति –

(1) कर्तृ सञ्ज्ञम् । (2) कर्म सञ्ज्ञम् ।

(3) सम्प्रदान सञ्ज्ञम् । (4) अपादान सञ्ज्ञम् ।

60. "लक्षणेत्थंभूताख्यान भागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः" इति सूत्रेण भवति –

(1) तृतीया विभक्तिः

(2) उक्त संज्ञा

(3) कर्म संज्ञा

(4) कर्म प्रवचनीय संज्ञा

61. 'अह्ना क्रोशेन वा अनुवाकोऽधीतः' इत्यत्र केन सूत्रेण तृतीया –

(1) येनाङ्गविकारः (2) अपवर्गे तृतीया

(3) कर्तृकरणयोस्तृतीया (4) इत्थं भूतलक्षणे

62. एषुवाक्येषु कारकदृष्ट्या अशुद्धवाक्यम् अस्ति –

(1) द्वादशभिः वर्षैः व्याकरणं श्रूयते ।

(2) न मे स्वदतेऽपूपः ।

(3) रुष्यति माता पुत्राय ।

(4) पापिनं न धनं दधात् ।

63. 'न भीतो मरणाद् अस्मि' इत्यत्र रेखाङ्कितपदे कारकविधायकं सूत्रं वर्तते –

(1) भीत्रार्थानां भयहेतुः

(2) ध्रुवमपायेऽपादानम् ।

(3) जनिकर्तुः प्रकृतिः ।

(4) भुवः प्रभवः ।

64. 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' इति सूत्रस्य प्रसक्तिः अत्राभवत् –

(1) वसन्तसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः ।

(2) छात्राणां छात्रेषु वा मैत्रः पटुः ।

(3) गोषुकृष्णा बहुक्षीरा ।

(4) गच्छत्सु धावन् शीघ्रः ।

65. निम्नलिखितैः सूत्रैः सह तेषाम् उदाहरणं सुमेलयत –

(क)	जनिकर्तुः प्रकृतिः ।	(i)	चोरात्त्रायते ।
(ख)	भुवः प्रभवः ।	(ii)	ग्रामादायाति ।
(ग)	भीत्रार्थानां भयहेतुः ।	(iii)	ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते ।
(घ)	अपादाने पञ्चमी ।	(iv)	हिमवतो गङ्गा प्रभवति ।

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(1)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(2)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(3)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(4)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)

66. "ध्रुवमपायेऽपादानम्" इत्यत्र "अपाय" पदस्य तात्पर्यं वर्तते –

(1) निश्चितम् (2) स्थिरम्

(3) विश्लेषः (4) अवधिभूतः

67. वैषयिकः आधारः नास्ति इह –

(1) व्याकरणे रुचिः (2) गंगायां घोषः

(3) मोक्षे इच्छाऽस्ति (4) अरिषु दारुणः

68. सुमेलनं कुरुत –

(क)	रघुवंश महाकाव्यम्	(i)	द्वाविंशति सर्गात्मकम्
(ख)	कुमारसम्भवम्	(ii)	विंशतिसर्गात्मकम्
(ग)	नैषधीयचरितम्	(iii)	एकोनविंशति सर्गात्मकम्
(घ)	शिशुपालवधम्	(iv)	सप्तदश सर्गात्मकम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(1)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(2)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)
(3)	(ii)	(iv)	(ii)	(i)
(4)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)

69. महाकवि–कालिदासस्य उपाधिरस्ति –

(1) आतपत्रम् (2) घण्टाकविः

(3) भुजङ्गः (4) दीपशिखा

70. रामायणस्य कतमत्काण्डं बृहत्काण्डरूपेण ख्यातम् –

(1) सुन्दरकाण्डम् (2) बालकाण्डम्

(3) युद्धकाण्डम् (4) उत्तरकाण्डम्

71. अनेन ग्रन्थेन कवीनां दर्पः अगलत् –

(1) दशकुमारचरितेन (2) वासवदत्तया

(3) कादम्बर्या (4) हर्षचरितेन

72. महाकवि–बाणभट्टस्य रचनारीतिः वर्तते –

(1) वैदर्भी (2) गौडी

(3) लाटी (4) पाञ्चाली

73. महाकविभासस्य रूपकाणां सुमेलनं कुरुत –

(क) लोककथामूलकम् (i) स्वप्नवासवदत्तम्

(ख) उदयनकथामूलकम् (ii) प्रतिमानाटकम्

(ग) रामायणमूलकम् (iii) पञ्चरात्रम्

(घ) महाभारतमूलकम् (iv) अविमारकम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(1)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(2)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(3)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(4)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

74. कस्मिन् रूपके विप्रः नायकोऽस्ति –

(1) स्वप्नवासवदत्ते

(2) अभिज्ञानशाकुन्तले

(3) मृच्छकटिके

(4) उत्तररामचरिते

75. भवभूतेः अस्य छन्दसः प्रशंसा क्षेमेन्द्रेण विहिता –

(1) शिखरिणीच्छन्दसः (2) स्रग्धराच्छन्दसः

(3) मालिनीच्छन्दसः (4) उपजातिच्छन्दसः

76. 'हितोपदेशः' इत्ययं ग्रन्थः कतिधा विभाजितः –

(1) पञ्चधा (2) चतुर्धा

(3) नवधा (4) अष्टधा

77. 'वैराग्यशतकम्' ग्रन्थस्यास्य लेखकोऽस्ति –

(1) भवभूतिः (2) भर्तृहरिः

(3) भासः (4) सदानन्दः

78. अमरशक्तिनाम्नः राज्ञः पुत्रान् नीतिशिक्षां दातुं कः नीतिग्रन्थः विष्णुशर्मणा विरचितः –

(1) पञ्चतन्त्रम्

(2) हितोपदेशः

(3) बृहत्कथा

(4) सिंहासनद्वात्रिंशिका

79. राजस्थानसंस्कृतकवीनां तदीयरचनानां च सुमेलनं करणीयम् –

(क) पं. मोहनलाल पाण्डेयः (i) नाचिकेतम्

(ख) प्रो. हरिराम आचार्यः (ii) कवितावल्लरी

(ग) पं. पद्मशास्त्री (iii) पत्रदूतम्

(घ) देवर्षिकलानाथशास्त्री (iv) मनाचेश्लोक मनोबोधः

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(1)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(2)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(3)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(4)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

80. "मधुच्छन्दा" कस्येयं रचना –

(1) श्रीहरिराम – आचार्यस्य

(2) श्रीराम दवे–महोदयस्य

(3) पं. गिरिधर–शर्मणः

(4) पं. पद्म–शास्त्रिणः

81. श्रीरामदवेमहोदयस्य कृतिः विद्यते –

(1) कथाकुसुमम् (2) समस्यासन्दोहः

(3) भृत्याभरणम् (4) स्वराज्यम्

82. 'होता कविक्रतुः सत्यः चित्रश्रवस्तमः' कस्य देवस्य विशेषणानि सन्ति ?

(1) इन्द्रदेवस्य (2) पुरुषस्य

(3) अग्निदेवस्य (4) वरुणस्य

83. वरुणसूक्ते (1.25) वरुणः न वेद –

(1) वीनां पदमन्तरिक्षेण पतताम् ।

(2) नावः समुद्रियः

(3) द्वादश मासाः

(4) पर्वतेषु क्षियन्तं शम्बरम् ।

84. यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव, स देवः वर्तते –

(1) वरुणः (2) अग्निः

(3) इन्द्रः (4) प्रजापतिः

85. "कस्मै देवाय हविषा विधेम" इति मन्त्रांशः अस्मिन् सूक्ते

(1) प्रजापतिसूक्ते (2) संज्ञानसूक्ते

(3) वरुणसूक्ते (4) अग्निसूक्ते

86. 'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्' इति मंत्रांशः प्राप्यते –

(1) इन्द्रसूक्ते (2) संज्ञानसूक्ते

(3) अग्निसूक्ते (4) वरुणसूक्ते

87. श्रीमद्भगवद्गीतानुसारं कस्य ना भावो विद्यते ?

(1) यतः (2) सतः

(3) असतः (4) भवतः

88. नचिकेता द्वितीयवररूपे कस्याः विद्यायाः उपदेशम् अयाचत् ?

(1) अग्निविद्यायाः

(2) वास्तुविद्यायाः

(3) रसायनविद्यायाः

(4) आत्मतत्त्वज्ञानस्य

89. अभिज्ञानशाकुन्तलानुसारं "त्वमपि सुतं सम्राजं सा पुरुम् इव अवाप्नुहि" इत्यत्र 'सा' इति का ?

(1) देवयानी (2) प्रियम्वदा

(3) शकुन्तला (4) शर्मिष्ठा

90. नाट्यशास्त्रानुसारं विदूषकं कः रक्षति ?

(1) ओङ्कारः (2) इन्द्रः

(3) सरस्वती (4) हरः

91. धूमज्योतिःसलिलमरुतां सन्निपातः कः ?

(1) मेघः (2) यक्षः

(3) कुबेरः (4) आम्रकूटः

92. बोद्धारो मत्सरग्रस्ताः, प्रभवः स्मयदूषिताः ।
अबोधोपहताश्चान्ये, जीर्णमङ्गे ______ ॥
रिक्तस्थानं पूरयत ।

(1) महाकाव्यम् (2) सरस्वती

(3) सुसंस्कृतम् (4) सुभाषितम्

93. स्वाध्यायः ईशस्तुतिः सन्ध्योपासना च अस्मिन् महायज्ञे स्वीक्रियन्ते

(1) ब्रह्मयज्ञे (2) दैवयज्ञे

(3) पितृयज्ञे (4) भूतयज्ञे

94. सन्ततिसिद्ध्यर्थं क्रियमाणः संस्कारविशेषः कः ?

(1) गर्भाधानसंस्कारः

(2) पुंसवनसंस्कारः

(3) विवाहसंस्कारः

(4) सीमन्तोन्नयनसंस्कारः

95. नैष्ठिकः उपकुर्वाणश्च इति द्वौ भेदौ स्तः –

(1) ब्रह्मचारिणाम् (2) गृहस्थिनाम्

(3) वानप्रस्थिनाम् (4) सन्न्यासिनाम्

96. अश्मारोहणम्, सप्तपदी, ध्रुवदर्शनम् इति पदानि केन संस्कारेण सम्बद्धानि सन्ति –

(1) उपनयनसंस्कारेण (2) विवाहसंस्कारेण

(3) जातकर्मसंस्कारेण (4) विद्यारम्भसंस्कारेण

97. भारतीयसंस्कृत्याधारेण मनुष्यस्य परमपुरुषार्थः कः ?

(1) मोक्षः (2) धर्मः

(3) अर्थः (4) कामः

98. भाषायाः प्राथमिकं कौशलं किम् ?

(1) श्रवणम् (2) लेखनम्

(3) वदनम् (4) पठनम्

99. एतेषु श्रवणकौशलस्य साधनं नास्ति –

(1) गुरुमुखम् (2) दूरवाणी

(3) आकाशवाणी (4) वर्णचित्राणि

100. अशुद्धोच्चारणस्य दशलक्षणानि कः उक्तवान् ?

(1) वाल्मीकिः (2) चरकः

(3) पतञ्जलिः (4) पाणिनिः

101. पद्यशिक्षणस्य विधिः वर्तते –

(1) आगमनविधिः (2) उद्बोधनविधि

(3) खण्डान्वयविधिः (4) सूत्रविधिः

102. अस्मिन् विधौ एकः जनः मातृभाषायां वदति अपरश्च तद्रूपान्तरं संस्कृते करोति । विधिरयं वर्तते –

(1) पुस्तकविधिः

(2) द्विभाषात्मकोविधिः

(3) तुलनाविधिः

(4) समीक्षाविधिः

103. प्रस्तावनाकौशलस्य मुख्योद्देश्यमस्ति –

(1) पूर्वज्ञानपरीक्षणम्

(2) ज्ञानस्य दृढीकरणम्

(3) काठिन्यनिवारणम्

(4) अनुरञ्जनम्

104. व्याख्यानं कतिविधम् ?

(1) षड्विधम् (2) चतुर्विधम्

(3) त्रिविधम् (4) द्विविधम्

105. वाग्रूपं भावप्रकटनमेव भवति –

(1) भाषणम् (2) लेखनम्

(3) पठनम् (4) श्रवणम्

106. यद्यपि बहुनाधीषे तथापि पठ पुत्र ! व्याकरणम् ।
स्वजनः श्वजनो मा भूत् सकलं शकलं सकृच्छकृत् ॥

अस्मिन् श्लोके कस्य महत्त्वं प्रतिपादितम् ?

(1) गद्यशिक्षणस्य (2) शुद्धोच्चारणस्य

(3) मौनपठनस्य (4) पद्यशिक्षणस्य

107. अनुवादस्य भेदेषु नास्ति –

(1) अक्षरशोऽनुवादः (2) छायानुवादः

(3) तथ्यानुवादः (4) तुलनानुवादः

108. पुनर्बलनकौशलस्य भेदौ स्तः –

(1) विधेयात्मकं नकारात्मकं च

(2) ज्ञानात्मकम् अवबोधात्मकं च

(3) ज्ञानात्मकं ऋणात्मकं च

(4) अवबोधात्मकं क्रियात्मकं च

109. शिक्षणदृष्ट्या गद्यशिक्षणस्य प्रथमसोपानं वर्तते –

(1) प्रवचनम्

(2) आदर्शवाचनम्

(3) अनुवाचनम्

(4) बोधप्रश्नकरणम्

110. हरबार्टीय पाठयोजनायाः पञ्चसोपानेषु कः नास्ति –

(1) प्रस्तावना

(2) विषयोपस्थापनम्

(3) प्रतिलिपीकरणम्

(4) सामान्यीकरणम्

111. व्याकरणानुवादविधेः प्रवर्तकः कः वर्तते ?

(1) पाणिनिः

(2) पतञ्जलिः

(3) हरबर्ट स्पेन्सरः

(4) श्री रामकृष्ण गोपालभण्डारकरः

112. कस्मिन् सोपाने श्रवणकौशलस्य विकासो भवति ?

(1) प्रस्तावनायाम् (2) गृहकार्ये

(3) आदर्शवाचने (4) मौनवाचने

113. संस्कृतव्याकरणशिक्षणस्य विधिः नास्ति –

(1) निगमनविधिः

(2) दण्डान्वयविधिः

(3) आगमनविधिः

(4) सूत्रविधिः

114. कामपि भाषां बोधयितुं मातृभाषायाः प्रयोगः कस्मिन् विधौ न भवति –

(1) पाठ्यपुस्तकविधौ

(2) अनुवादविधौ

(3) प्रत्यक्षविधौ

(4) द्विभाषीयविधौ

115. गद्यपाठयोजनायाः 'उद्देश्यकथनम्' इत्यस्य सोपानस्य उद्देश्यं किम् ?

(1) ज्ञातांशस्य अनुस्मरणम्

(2) उच्चारणस्य संशोधनम्

(3) पाठोन्मुखीकरणम्

(4) भाषणकौशलस्य सम्पादनम्

116. उदाहरणानि प्रस्तूय ततो नियमनिर्धारणं नाम किम् ?

(1) गमनम् (2) आगमनम्

(3) निगमनम् (4) नियमनम्

117. दण्डान्वयप्रणाल्यां कीदृशाः प्रश्नाः भवन्ति ?

(1) पाठ्यविषयाधारिताः

(2) व्याकरणाधारिताः

(3) सूत्राधारिताः

(4) उदाहरणाधारिताः

118. कुत्र अन्त्यं हलित् स्यात् ?

(1) अक्षरे (2) उच्चारणे

(3) आदेशे (4) उपदेशे

119. "तस्य लोपः" इत्यत्र 'तस्य' इति कस्य लोपः ?

(1) इतः (2) ततः

(3) कुतः (4) अतः

120. ताल्वादिषु सभागेषु स्थानेष्वधोभागे निष्पन्नोऽच् स्यात् –

(1) उदात्तसञ्ज्ञः (2) स्वरितसञ्ज्ञः

(3) अनुदात्तसञ्ज्ञः (4) ह्रस्वसंज्ञः

121. अधोलिखितेषु कस्मिन् पदे संहितासंज्ञा विद्यते ?

(1) रामः (2) रमेशः

(3) कमलम् (4) पठति

122. "तुल्यास्य प्रयत्नं सवर्णम्" इत्यत्र 'तुल्यास्य प्रयत्नम्' इत्यस्य कोऽर्थः ?

(1) ताल्वादिस्थानं बाह्यप्रयत्नश्च इत्येतद्द्वयं यस्य येन तुल्यम् ।

(2) ताल्वादिस्थानं बाह्याभ्यन्तरप्रयत्नश्च इत्येतद्द्वयं यस्य येन तुल्यम् ।

(3) ताल्वादिस्थानम् आभ्यन्तरप्रयत्नश्च इत्येतद्द्वयं यस्य येन तुल्यम् ।

(4) बाह्यप्रयत्नः आभ्यन्तरप्रयत्नश्च इत्येतद्द्वयं यस्य येन तुल्यम् ।

123. "ओ" कारस्य उच्चारणस्थानमस्ति –

(1) कण्ठतालु (2) मूर्धोष्ठम्

(3) कण्ठोष्ठम् (4) दन्तोष्ठम्

124. उदाहरणम् – सन्धिश्च इत्यनयोः असङ्गतमेलनं वर्तते –

(1) घस्लादेशः, वहवागमनम् – यण् सन्धिः ।

(2) वटवृक्षः, पूजार्हावरिसूदन – अयादि सन्धिः ।

(3) वधूत्सवः, महतीच्छा – सवर्णदीर्घ सन्धिः ।

(4) ममौदासीन्यम्, बिम्बौष्ठी – पररूपम् ।

125. निम्नलिखित वर्णेषु विवृतवर्णाः सन्ति –

(1) य, व, र, ल (2) क, ख, ग, घ

(3) अ, इ, उ, ओ (4) श, ष, व, ह

126. 'झ' इत्यस्य बाह्यप्रयत्नः कः ?

(1) विवारः श्वासः अघोषश्च ।

(2) विवारः श्वासः घोषश्च ।

(3) संवारः नादः अघोषश्च ।

(4) संवारः नादः घोषश्चः ।

127. 'होतॄकारः' इत्यत्र कः सन्धिः ?

(1) गुण सन्धिः (2) यण् सन्धि

(3) दीर्घ सन्धिः (4) अयादि सन्धिः

128. एषु प्रगृह्यसंज्ञायाः उदाहरणम् अस्ति –

(क) हरी एतौ (ख) विष्णु इमौ

(ग) गङ्गे अमू (घ) इ इन्द्रः

(1) (क), (ख), (ग), (घ)

(2) (क), (ग), (घ)

(3) (क), (ख), (ग)

(4) (क), (ख), (घ)

129. 'अवङ् स्फोटायनस्य' सूत्रेण अवङ्कृते रूपं भवति –

(1) गवाग्रम् (2) गोऽग्रम्

(3) गवेन्द्रः (4) गौरेयम्

130. 'हरेऽव' इत्यत्र अस्य सूत्रस्य प्रसक्तिः अभवत् –
(1) एचोऽयवायावः (2) एङि पररूपम्
(3) एङः पदान्तादति (4) आद् गुणः

131. आदुपसर्गादेङादौ धातौ परे एकादेशः तद् विधायकं सूत्रं च वर्तते –
(1) पररूपैकादेशः – एङि पररूपम् ।
(2) पूर्वरूपैकादेशः – एङि पूर्वरूपम् ।
(3) पररूपैकादेशः – एङः पदान्तादति ।
(4) पूर्वरूपैकादेशः – उपसर्गादृति धातौ ।

132. श्चुत्व – प्रकरणे "रामश्चिनोति" पदस्य सन्धिविच्छेदः –
(1) रामस् + चिनोति
(2) रामश् + चिनोति
(3) रामष् + चिनोति
(4) राम + चिनोति

133. एषुविकल्पेषु किमसङ्गतम् अस्ति –
(1) झलांजशोऽन्ते – त्वक् + धारणम् ।
(2) मोऽनुस्वारः – सत्यम् + वद् ।
(3) अनुस्वारस्ययंयि परसवर्णः – यशान्सि ।
(4) ङमोह्रस्वादचिङमुण्नित्यम् – सुगण्णैक्यम् ।

134. 'छे च' सूत्रस्य उदाहरणम् वर्तते –
(क) स्वच्छाया । (ख) शिवच्छाया ।
(ग) आच्छादयति । (घ) लक्ष्मीच्छाया ।
(1) (क), (ख), (ग), (घ)
(2) (क), (ख), (घ)
(3) (क), (ख)
(4) (क), (ग), (घ)

135. 'झयो होऽन्यतरस्याम्' इति सूत्रेण नादस्य घोषस्य संवारस्य महाप्राणस्य हकारस्य वर्णादेशः भवति –
(1) वर्गतृतीयः (2) वर्गचतुर्थः
(3) वर्गद्वितीयः (4) वर्गप्रथमः

136. पूर्वसवर्णसन्धेः उदाहरणं नास्ति –
(1) अज्झीनम् (2) सम्मद्घर्षः
(3) वाग्धरिः (4) तच्छिवः

137. 'खरि परे विसर्गस्य स्थाने 'सकारादेशः' सूत्रेण क्रियते –
(1) खरवसानयोर्विसर्जनीयः
(2) विसर्जनीयस्य सः
(3) रोरि
(4) वा शरि

138. "सूर्यो भाति" इत्यत्र "सूर्यरु + भाति" इति सन्धिविच्छेदे कृते रुकारस्योकारादेशः केन सूत्रेण भवति ?
(1) विसर्जनीयस्य सः (2) हलि सर्वेषाम्
(3) रोरि (4) हशि च

139. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –
(क) छे च (i) भो देवाः
(ख) खरि च (ii) प्रेजते
(ग) हलि सर्वेषाम् (iii) शिवच्छाया
(घ) एङि पररूपम् (iv) उत्थानम्

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(1)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(2)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(3)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(4)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

140. "हरीरम्यः" इति सन्धिकार्ये प्रवृत्त सूत्राणां क्रमः विद्यते –

(1) ससजुषो रुः, विसर्जनीयस्य सः, रोरि ।

(2) हशि च, रोरि, ससजुषो रुः ।

(3) ससजुषो रुः, रोरि, ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः ।

(4) विसर्जनीयस्य सः, रोरि, ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः ।

141. 'शिवोऽर्च्यः' इत्यत्र केन सूत्रेण रोः उत्वं भवति ?

(1) हशि च

(2) अतो रोरप्लुतादप्लुते

(3) ससजुषो रुः

(4) हलि सर्वेषाम्

142. "सप्तानां गङ्गानां समाहारः" इति विग्रहे समासः स्यात् –

(1) अव्ययीभाव समासः

(2) तत्पुरुष समासः

(3) कर्मधारय समासः

(4) बहुव्रीहि समासः

143. 'ससखि' इति समस्तपदस्य सामासिकः विग्रहः वर्तते –

(1) सदृशः सख्या (2) सख्युः सहितम्

(3) सखिना सदृशः (4) सख्या सहितम्

144. समासविग्रहः समासयुक्तं पदम् इत्यनयोः विषये समुचितं मेलापक विकल्पं चिन्वन्तु –

(1) स्त्री प्रमाणः यस्य सः – स्त्रीप्रमाणः ।

(2) त्रयः मूर्धानः यस्याः सः – त्रिमूर्धी ।

(3) कृतं कृत्यं येन सः – कृतकृत्यः ।

(4) अन्तः लोमानि यस्य सः – अन्तर्लोमा ।

145. 'शिरश्च ग्रीवा च अनयोः समाहारः' अस्य समस्तपदमस्ति –

(1) शिरोग्रीवा (2) शिरग्रीवम्

(3) शिरग्रीवा (4) शिरोग्रीवम्

146. 'चोरभयम्' इत्यत्र सूत्रेण समासः भवति –

(1) स्तोकान्तिक – दूरार्थ–कृच्छाणिक्तेन

(2) षष्ठी

(3) पञ्चभ्याः स्तोकादिभ्यः

(4) पञ्चमी भयेन

147. 'समासविग्रहः समस्तपदं च' इत्यनयोः विषये समुचितं मेलनं वर्तते –

(1) अहश्च रात्रिश्च – अहोरात्रम् ।

(2) कृष्णस्य सखा – कृष्णसखः ।

(3) अतिक्रान्तः रात्रिम् – अतिरात्रिः ।

(4) परमः राजा – परमराजा ।

148. 'चेयम्' इत्यत्र प्रत्ययः

(1) ण्यत् (2) ल्यप्

(3) यत् (4) क्यप्

149. "स्तुत्यः" इति कृदन्तरूपे प्रत्ययो भवति –

(1) अनीयर् (2) ण्यत्

(3) क्यप् (4) यत्

150. अधि + इङ् धातोः तृच् – प्रत्यये कृते कृदन्त रूपं भवति –

(1) अध्यैता (2) अध्यता

(3) अध्येता (4) अधीता

3190117

रफ कार्य के लिए स्थान